.. shrii raama sahasra naamaavaLi ..

॥ श्री राम सहस्र नामावळि ॥

ॐ श्रीमते नमः
श्रीरामाय
रघुपुङ्गवाय
रामचंद्राय
सदाचाराय
राजेंद्राय
जानकी पतये
अग्रगण्याय
वरेण्याय
वरदाय
१०
परमेश्वराय नमः
जनार्दनाय
जितामित्राय
परार्थैकप्रयोजनाय
विश्वामित्रप्रियाय
दांताय
शतृजिते
शतृतापनाय
सर्वज्ञाय
वालिमर्दनाय
२०
ज्ञान भाव्याय
अपरिच्छेद्याय
वाग्मीने
सत्यव्रताय
सर्वदेवाय
शरण्याय
शुचये
ज्ञान गंयाय
दृढप्रज्ञाय
खरध्वंसिने
३०
प्रतापवते
द्युतिमते
आत्मवते
वीराय
जितक्रोधाय
अरिमर्दनाय
विश्वरूपाय

विशालाक्षाय
प्रभवे
परिवृढाय
४०
दृढाय
ईशाय
खड्गधराय
श्रीमते
कौसलेयाय
अनसूयकाय
विपुलांसाय
महोरस्काय
परमेष्ठिने
परायणाय
५०
सत्यव्रताय
सत्यसंधाय
गुरवे
परमधार्मिकाय
लोकज्ञाय
लोकवंद्याय
लोकात्मने
लोककृते
परस्मै
अनादये
६०
भगवते
सेव्याय
जितमाय
रघूद्वहाय
रामाय
दयाकराय
दक्षाय
सर्वज्ञाय
सर्वपावनाय
ब्रह्मण्याय
७०
नीतिमते
गोप्त्रे
सर्वदेवमयाय
हरये

सुन्दराय
पीतवाससे
सूत्रकाराय
पुरातनाय
सौम्याय
महर्षये
८०
कोदण्डिने
सर्वज्ञाय
सर्वगोचराय
कवये
सुग्रीववरदाय
सर्वपुण्याधिकप्रदाय
भवाय
जितारिषड् वर्गाय
महोदराय
अघनाशनाय
९०
सुकीर्तिये
आदिपुरुषाय
कान्ताय
पुण्यकृतागमाय
अकल्मषाय
चतुर्बाहवे
सर्ववासाय
दुरासदाय
मितभाषिने
निवृत्तात्मने
१००
स्मृतिमते
वीर्यवते
प्रभवे
धीरोदांताय
घनश्यामाय
सर्वायुधविशारदाय
अध्यात्मयोगनिलयाय
सुमनसे
लक्ष्मणाग्रजाय
सर्वतीर्थमयाय
११०
शूराय

सर्वयज्ञफलप्रदाय
यज्ञस्वरूपिने
यज्ञेशाय
जरामरणवर्जिताय
वर्णाश्रमकराय
वर्णिने
शतृजिते
पुरुषोत्तमाय
विभीषण प्रतिष्ठात्रे
१२०
परमात्मने
परात्पराय
प्रमाणभूताय
दुर्जेयाय
पूर्णाय
परपुरञ्जयाय
अनन्तदृष्टये
आनन्दाय
धनुर्वेदाय
धनुर्धराय
१३०
गुणाकराय
गुणश्रेष्ठाय
सच्चिदानंद विग्रहाय
अभिवंद्याय
महाकायाय
विश्वकर्मणे
विशारदाय
विनितात्मने
वीतरागाय
तपस्वीराय
१४०
जनेश्वराय
कल्याणप्रकृतये
कल्पाय
सर्वेशाय
सर्वकामदाय
अक्षयाय
पुरुषाय
साक्षीणे
केशवाय

पुरुषोत्तमाय
१५०
लोकाध्यक्षाय
महामायाय
विभीषण वरप्रदाय
आनन्द विग्रहाय
ज्योतीशे
हनुमत्प्रभवे
अक्षयाय
भ्राजिष्णवे
सहनाय
भोक्त्रे
१६०
सत्यवादिने
बहुश्रुताय
सुखदाय
कारणाय
कर्त्रे
भवबंध विमोचनाय
देवचूडामणये
नेत्रे
ब्रह्मण्याय
ब्रह्मवर्धनाय
१७०
संसार तारकाय
रामाय
सर्वदुक्खविमोक्षकृते
विद्वत्तमाय
विश्वकर्त्रे
विश्वहर्त्रे
विश्वकृते
नित्याय
नियतकल्याणाय
सीताशोक विनाशकृते
१८०
काकुत्स्थाय
पुण्डरीकाक्षाय
विश्वामित्र भयापहाय
मारीचमथनाय
रामाय
विराधवध पण्डिताय

दुस्स्वप्न नाशनाय
रम्याय
किरीटीने
त्रिदशाधिपाय
१९०
महाधनुषे
महाकायाय
भीमाय
भीमपराक्रमाय
तत्वस्वरूपिणे
तत्वज्ञाय
तत्ववादिने
सुविक्रमाय
भूतात्माने
भूतकृतये
२००
स्वामिने
कालज्ञानिने
महावपुषे
अनिर्विण्णाय
गुणाग्राहिणे
निष्कलङ्काय
कलंकघ्ने
स्वभावभद्राय
शतघ्नाय
केशवाय
२१०
स्थाणवे
ईश्वराय
भूतये
शम्भवे
आदित्याय
स्थविष्ठाय
शाश्वताय
धृवाय
कवचिने
कुण्डलिने
२२०
चक्रिने
खड्गिने
भक्तजनप्रियाय
अमृत्यवे
जन्मरहिताय
सर्वजिते
सर्वगोचराय
अनुत्तमाय

अप्रमेयात्मने
सर्वादये
२३०
गुणसागराय
समाय
समात्मने
समगाय
जटामुकुट मण्डिताय
अजेयाय
सर्वभूतात्मने
विष्वक्सेनाय
महातपसे
लोकाध्यक्षाय
२४०
महाबाहवे
अमृताय
वेदवित्तमाय
सहिष्णवे
सद्गतये
शास्त्रे
विश्वयोनये
महाद्युतये
अतीन्द्रयाय
ऊर्जिताय
२५०
प्रांशवे
उपेन्द्राय
दमनाय
बलिने
धनुर्वेदाय
विधात्रे
ब्रह्मणे
विष्णवे
शङ्कराय
हंसाय
२६०
मरीचये
गोविंदाय
रत्नगर्भाय
मतये
व्यासाय
वाचस्पतये
सर्वदर्पितासुरमर्दनाय
जानकिवल्लभाय
पूज्याय
प्रकटाय

२७०
प्रीतिवर्धनाय
सम्भवाय
अतीन्द्रियाय
वेद्याय
अनिर्देशाय
जांबवत्प्रभुवे
दमनाय
माधवाय
व्यापिने
विश्वरूपिने
२८०
निरञ्जनाय
नारायणाय
अग्रगण्ये
साधवे
जटायुप्रीतिवर्धनाय
नैकरूपाय
जगन्नाथाय
सुरकार्यहिताय
प्रभवे
जितक्रोधाय
२९०
जितारातये
प्लवगाधिपराज्यदाय
वसुदाय
सुभुजाय
नैकमायाय
भव्याय
प्रमोदनाय
चण्डांशवे
सिद्धसङ्कल्पाय
शरणागतवत्सलाय
३००
अङ्गदाय
रोगहर्त्रे
मन्त्रविदे
मन्त्रभावनाय
सौमित्रिवत्सलाय
धुर्याय
व्यक्ताव्यक्तस्वरूपधृते
विशिष्ठाय
ग्रामणे
श्रीमते
३१०
अनुकूलाय

प्रियंवदाय
अतुलाय
सात्विकाय
धीराय
शरासन विशारदाय
ज्येष्ठाय
सर्वगुणोपेताय
शक्तिमते
ताटकान्तकाय
३२०
वैकुण्ठाय
प्राणिनांप्राणाय
कमठाय
कमलापतये
गोवर्धनधराय
मत्स्यरूपाय
कारुण्यसागराय
कुम्भकर्णप्रभेत्रे
गोपिगोपाल संवृताय
मायाविने
३३०
स्वप्नाय
व्यापिने
रेणुकेयबलापहाय
पिनाकमथनाय
वन्द्याय
समर्थाय
गरुडध्वजाय
लोकत्रयाय
लोकचरिताय
भरताग्रजाय
३४०
श्रीधराय
सद्गते
लोकसाक्षीणे
नारायणाय
बुधाय
मनोवेगिने
मनोरूपिणे
पूर्णाय
पुरुषपुङ्गवाय
यदुश्रेष्ठाय
३५०
यदुपतये
भूतावासाय
सुविक्रमाय

तेजोधराय
धराय
अव्यग्राय
चतुर्मूर्त्तये
महानिधये
चाणूरमर्दनाय
दिव्याय
३६०
शांताय
भरतवन्दिताय
शब्दातिगाय
गभीरात्मने
कोमलाङ्गाय
प्रजागराय
लोकगर्भाय
शेषशायिने
क्षीराब्धिनिलयाय
अमलाय
३७०
आत्मयोनये
आदीनात्मने
सहस्राक्षाय
सहस्रपादे
अमृतांशवे
महागर्भाय
निवृत्तविषयस्पृहाय
त्रिकालज्ञाय
मुनये
साक्षिणे
३८०
विहायसगतये
कृतिने
पर्जन्याय
कुमुदाय
भूतावासाय
कमललोचनाय
श्रीवत्सवक्षसे
श्रीरामाय
वीरघ्ने
लक्ष्मणाग्रजाय
३९०
लोकाभिरामाय
लोकार्तिमर्दनाय
सेवकप्रियाय
सनातनतमाय
मेघश्यामलाय

राक्षसान्तकृते
दिव्यायुधधराय
श्रीमते
अप्रमेयाय
जितेन्द्रियाय
४००
भूदेववन्द्याय
जनकप्रियकृते
प्रपितामहाय
उत्तमाय
सात्विकाय
सत्याय
सत्यसन्धाय
त्रिविक्रमाय
सुव्रताय
सुलभाय
४१०
सूक्ष्माय
सुघोषाय
सुखदाय
सुधिये
दामोदराय
अच्युताय
शार्ङ्गिणे
वामनाय
मधुराधिपाय
देवकीनन्दनाय
४२०
शौर्यै
मधुकैटभमर्दनाय
प्रवर्धनाय
सप्ततालप्रभेत्रे
मित्रवंशाय
कालस्वरूपिणे
कालात्मने
कालाय
कल्याणदाय
कवये
४३०
संवत्सराय
ऋतवे
पक्षाय
अयनाय
दिवसाय
युगाय
स्तव्याय

विविक्ताय
निर्लेपाय
सर्वव्यापिने
४४०
निराकुलाय
रसाय
रसज्ञाय
सारज्ञाय
लोकसाराय
रसात्मकाय
सर्वदुक्खातिगाय
विद्याराशये
परमगोचराय
शेषाय
४५०
विशेषाय
विगतकल्मषाय
रघुनायकाय
वर्णश्रेष्ठाय
वर्णवाह्याय
वर्ण्याय
अवर्ण्याय
गुणोज्ज्वलाय
कर्मसाक्षिणे
अमरश्रेष्ठाय
४६०
देवासुरनमस्कृताय
सुजाताय
देवाधिदेवाय
देवर्षये
देवासुरवरप्रदाय
सर्वदेवमयाय
चक्रीणे
शारङ्गपाणये
अनुत्तमाय
मनसे
४७०
बुद्धये
अहंकाराय
प्रकृतये
पुरुषाय
अव्ययाय
अहल्यापावनाय
स्वामिने
पितृभक्ताय
वरप्रदाय

न्यायाय
४८०
नयधराय
श्रीमते
नयाय
नगधराय
धृवाय
लक्ष्मीविश्वम्भराभर्त्रे
देवेन्द्राय
बलिमर्दनाय
बाणारिमर्दनाय
यज्वने
४९०
अनुत्तमाय
मुनिसेविताय
देवाग्रण्ये
परध्यानतत्पराय
परमाय
परस्मै
सामगानप्रियाय
अक्रूराय
पुण्यकीर्तये
सुलोचनाय
५००
पुण्याय
पुण्याधिकाय
पूर्वस्मै
पूर्णाय
पूरयित्रे
रवये
जटिलाय
कल्मषध्वान्त प्रभञ्जन विभावसवे
अव्यक्तलक्षणाय
व्यक्ताय
५१०
दशास्यद्विपकेसरिणे
कलारूपाय
कलानिधये
कमलानन्दवर्धनाय
जयाय
जरारये
सर्वागशमनाय
भवभञ्जनाय
अलङ्करिष्णवे
अचलाय
५२०

रोचिष्णवे
विक्रमोत्तमाय
अंशवे
शब्दपतये
शब्दगोचराय
रञ्जनाय
रघुवे
निश्शब्दाय
प्रणवाय
मालिने
५३०
स्थूलाय
सूक्ष्माय
विचक्षणाय
आत्मयोनये
आदिनात्मने
सहस्राक्षाय
सहस्रपाते
सनातनतमाया
स्रग्विने
पेशलाय
५४०
जविनांवराय
शक्तिमते
शङ्खभृते
नाथाय
गदापद्मरथाङ्गभृते
निरीहाय
निर्विकल्पाय
चिद्रूपाय
वीतसाध्वसाय
शतानन्नाय
५५०
सहस्राक्षाय
शतमूर्तये
धनप्रभाय
हृत्पुण्डरीक शयनाय
कठिनाय
द्रवाय
उग्राय
ग्रहपतये
कृष्णाय
समर्थाय
५६०
अनर्थनाशनाय
अधर्मशत्रवे

रक्षोघ्नाय
पुरुहूताय
पुरुष्टुताय
ब्रह्मगर्भाय
बृहद्गर्भाय
धर्मधेनवे
धनागमाय
हिरण्यगर्भाय
५७०
जोतिष्मते
सुललाटाय
सुविक्रमाय
पितृ पूजारताय
भवानीप्रियकृते
वशिने
नराय
नारायणाय
श्यामाय
कपर्दिने
५८०
नीललोहिताय
रुद्राय
पशुपतये
स्थाणवे
विश्वामित्राय
द्विजेश्वराय
मातामहाय
मातरिश्वने
विरिञ्चाय
विष्टरश्रवसे
५९०
अक्षोभ्याय
सर्वभूतानांचण्डाय
सत्यपराक्रमाय
वालरितल्याय
महाकल्पाय
कल्पवृक्षाय
कलाधराय
निदानाय
तपनाय
अमोघाय
६००
श्रेश्ठाय
परबलापहृते
कबन्धमथनाय
दिव्याय

कम्बुग्रीवाय
शिवप्रियाय
शङ्खाय
अनिलाय
सुनिष्पन्नाय
सुरभये
६१०
शिशिरात्मकाय
असंसृष्टाय
अतिथये
शूराय
परर्थये
पापनाशकृते
वसुश्रवसे
कव्यवाहाय
प्रतपसे
विश्वभोजनाय
६२०
रामाय
नीलोत्पलश्यामाय
ज्ञानस्कन्धाय
महाद्युतये
पवित्रपादाय
पापारये
मणिपूराय
नभोगतये
उत्तारणाय
दुष्कृतिघ्ने
६३०
दुर्धर्षाय
दुस्सहाय
अभयाय
अमृताशाय
अमृतवपुशे
धर्माय
कृपाकराय
भर्गाय
विवस्वते
आदित्याय
६४०
योगाचार्याय
दिवस्पतये
उदारकीर्तये
उद्योगिने
वाङ्मयाय
सदसन्मयाय

नक्षत्रमालिने
राकेशाय
स्वाधिष्ठान षडाश्रयाय
चतुर्वर्गफलाय
६५०
वर्गीणे
शक्तित्रयफलाय
निधये
निधान गर्भाय
निरीशाय
व्याजमर्दनाय
श्रीवल्लभाय
श्रीरम्भाय
शांतये
६६०
भद्राय
समङ्गसाय
भूशयाय
भूतकृते
भूतये
भूषणाय
भूतवाहनाय
अकायाय
भक्तकाकुस्थाय
कालज्ञानिने
६७०
महावटवे
परार्थवृतये
अचलाय
विविक्ताय
शृतिसागराय
स्वभावभद्राय
मध्यस्थाय
संसारभयनाशनाय
वेद्याय
वैद्याय
६८०
वियद्गोप्त्रे
सर्वामरमुनीश्वराय
सुरेन्द्राय
करणाय
कर्मणे
कर्मकृते
कर्मिणे
अधोक्षजाय
धैर्याय

अग्रधूर्याय
६९०
धार्त्रीशाय
सङ्कल्पाय
शर्वरीपतये
परमार्थगुरुवे
वृद्धाय
शुचये
आश्रितवत्सलाय
विष्णवे
जिष्णवे
विभवे
७००
यज्ञाय
यज्ञेशाय
यज्ञपालकाय
प्रभविष्णवे
ग्रसिष्णवे
लोकात्मने
लोकभावनाय
केशवाय
केशिघ्ने
काव्याय
७१०
कवये
कारणकारणाय
काव्यकर्त्रे
कालशेषाय
वासुदेवाय
पुरुष्टुताय
आदिकर्त्रे
वराहाय
माधवाय
मधुसूदनाय
७२०
नारायणाय
नराय
हंसाय
विष्वक्सेनाय
जनार्दनाय
विश्वकर्त्रे
महायज्ञाय
ज्योतिष्मते
पुरुषोत्तमाय
वैकुण्ठाय
७३०

पुण्डरीकाक्षाय
कृष्णाय
सूर्याय
सुरार्चिताय
नारसिंहाय
महाभीमाय
वज्रदंष्ट्राय
नखायुधाय
आदिदेवाय
जगत्कर्त्रे
७४०
योगीशाय
गरुडध्वजाय
गोविंदाय
गोपतये
गोप्त्रे
भूपतये
भुवनेश्वराय
पद्मनाभाय
हृषीकेशाय
धात्रे
७५०
दामोदराय
प्रभवे
त्रिविक्रमाय
त्रिलोकेशाय
ब्रह्मेशाय
प्रीतिवर्धनाय
वामनाय
दुष्टदमनाय
गोविंदाय
गोपवल्लभाय
७६०
भक्तप्रियाय
अच्युताय
सत्याय
सत्यकीर्त्तये
धृतये
स्मृतये
कारुण्याय
करुणाय
व्यासाय
पापघ्ने
७७०
शान्तिवर्धनाय
संयासिने

शास्त्रतत्वज्ञाय
मन्दराद्रिनिकेतनाय
बदरीनिलयाय
शांताय
तपस्विने
वैद्युतप्रभाय
भूतावासाय
गुहावासाय
७८०
श्रीनिवासाय
श्रियःपते
तपोवासाय
मुदावासाय
सत्यवासाय
सनातनाय
पुरुषाय
पुष्कराय
पुण्याय
पुष्कराक्षाय
७९०
महेश्वराय
पूर्णमूर्तये
पुराणज्ञाय
पुण्यदाय
पुण्यवर्धनाय
शङ्खिने
चक्रिणे
गदिने
शार्ङ्गिने
लाङ्गलिने
८००
मुसलिने
हलिने
किरीटिने
कुण्डलिने
हारिने
मेखलिने
कवचिने
ध्वजिने
योगिने
जेत्रे
८१०
महावीर्याय
शतृजिते
शतृतापनाय
शास्त्रे

शास्त्रकराय
शास्त्राय
शङ्करस्तुताय
सारथये
सात्त्विकाय
स्वामिने
८२०
सामवेदप्रियाय
हवनाय
समाय
साहसाय
शक्तये
सम्पूर्णाङ्गाय
समृद्धिमते
स्वर्गदाय
कामदाय
श्रीदाय
८३०
कीर्तिदाय
अकीर्तिनाशकाय
मोक्षदाय
पुण्डरीकाक्षाय
क्षीराब्धिकृतकेतनाय
सर्वात्मने
सर्वलोकेशाय
प्रेरकाय
पापनाशनाय
सर्वदेवाय
८४०
जगन्नाथाय
सर्वलोकमहेश्वराय
स्वर्गस्थित्यन्तकृते
देवाय
सर्वलोकसुखावहाय
अक्षयाय
शाश्वताय
अनंताय
क्षयवृद्धि विवर्जिताय
स्वयंतेजसे
८५०
निर्लेपाय

निर्गुणाय
सूक्ष्माय
निर्विकाराय
निरञ्जनाय
सर्वोपाधि विनिर्मुक्ताय
सत्तामात्र व्यवस्थिताय
अधिकारिणे
विभवे
नित्याय
८६०
परमात्मने
सनातनाय
अचलाय
निर्मलाय
व्यापिने
नित्यतृप्ताय
निराश्रयाय
श्यामाय
यूने
लोहिताक्षाय
८७०
दीप्तास्याय
मितभाषिणे
आजानुबाहवे
सुमुखाय
सिंहस्कंधाय
महाभुजाय
सत्यवते
गुणसम्पन्नाय
सुदीप्तिमते
कालात्मने
८८०
भगवते
कालाय
कालचक्र प्रवर्तकाय
नारायणाय
परंज्योतिशे
परमात्मने
सनातनाय
विश्वसृजे
विश्वगोप्त्रे

विश्वभोक्त्रे
८९०
शाश्वताय
विश्वेश्वराय
विश्वमूर्तये
विश्वात्मने
विश्वभावनाय
सर्वभूतसुहृते
शांताय
सर्वभूतानुकम्पनाय
सर्वेश्वराय
सर्वस्मै
९००
श्रीमते
आश्रितवत्सलाय
स्वर्गाय
सर्वभूतेशाय
सर्वभूताशयस्थिताय
अभ्यन्तरस् तमसश्छेत्रे
नारायणाय
परस्मै
अनादिनिधनाय
स्रष्ट्रे
९१०
प्रजापतिपतये
हरये
नारसिंहाय
हृषीकेशाय
सर्वात्मने
सर्वदृशे
वशिने
नेत्रे
सनातनाय
कर्त्रे
९२०
जगतस्तस्थु षश्चैव प्रभवे
श्रीमते
धात्रे
विधात्रे
सर्वेषां प्रभवे
ईश्वराय

सहस्रमूर्तये
विश्वात्मने
विष्णवे
विश्वदृशे
९३०
अव्ययाय
पुराणपुरुषाय
स्रष्ट्रे
सहस्राक्षाय
सहस्रपदे
तत्वाय
नारायणाय
विष्णवे
वासुदेवाय
सनातनाय
९४०
परमात्मने
परब्रह्मने
सच्चिदानन्द विग्रहाय
परंज्योतिशे
परन्धांने
पराकाशाय
परात्पराय
अच्युताय
पुरुषाय
कृष्णाय
९५०
शाश्वताय
शिवाय
ईश्वराय
नित्याय
सर्वगताय
स्थाणवे
उग्राय
साक्षिणे
प्रजापतये
हिरण्यगर्भाय
९६०
सवित्रे
लोककृते
लोकभुजे

विभवे
आकारवाच्याय
भगवते
श्रीपते
पतये
पुम्से
सर्वलोकेश्वराय
९७०
सीतापतये
सर्वज्ञाय
सर्वतोमुखाय
स्वामिने
सुशीलाय
सुलभाय
सर्वज्ञाय
सर्वशक्तिमते
नित्याय
सम्पूर्णकामाय
९८०
नैसर्गिकसुहृते
सुखिने
कृपापीयूष जलधये
सर्वदेहिनां शरण्याय
नारायणाय
स्वामिने
जगतांपतये
ईश्वराय
अनन्ताय
९९०
शरण्याय
भूतानाय
श्रीपतये
रामाय
गुणभृते
निर्गुणाय
महते
राजीव लोचनाय
श्रीरामाय नमः

Encoded by Saroja Sunderesan - sunderji@batelco.com.bh
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com
Last updated March 22, 1999